RESEARCH HUB – International Multidisciplinary Research Journal (RHIMRJ)
Research Paper
Available online at: www.rhimrj.co.in

नियोजित विकास और जनजातीय महिलाओं की स्थिति

डॉ. राजकुमार सिंह बोलिया

व्याख्याता, समाजशास्त्र, मा.ला.व. राजकीय महाविद्यालय, भीलवाड़ा (राज.)

प्रस्तावना –

भारत में निवास करने वाले आदिवासियों/अनुसूचित जनजातियों की संख्या 2001 की जनगणना के अनुसार लगभग **8.43 करोड़** है जो कि करीब **8.2 प्रतिशत** होता है। मध्यप्रदेश में निवास करने वाले आदिवासियों की संख्या पूरे देश में सबसे अधिक है जो कि लगभग **1.22 करोड़** है। मध्यप्रदेश में अनुसूचित जनजातियों का राज्य की कुल जनसंख्या का करीब **20.3 प्रतिशत** है। यह राष्ट्र स्तर से काफी अधिक हे। देश में निवासरत आदिवासियों की कुल जनसंख्या का लगभग **14.50 प्रतिशत** भाग म.प्र. में निवास करता है। इनमें से भी अगर हम आदिवासी महिलाओं की संख्या देखें तो ये लगभग **60.39 लाख** है। म.प्र. की कुल जनजातीय जनसंख्या का **49.37 प्रतिशत** भाग आदिवासी महिलाओं के द्वारा निर्मित होता है। उपरोक्त तथ्यों को मद्देनजर रखते हुए यह कहा जा सकता है कि जनजातियों में महिलाओं का भाग भी पुरूषों के बराबर है। विकास के किसी भी स्तर पर जनजातीय महिलाओं को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। स्वतंत्रता के पूर्व से लेकर वर्तमान तक कई योजनाओं एवं कार्यक्रमों तथा जिले स्तर पर किए गये कार्यों में आदिवासियों के लिये विशेष ध्यान केन्द्रित किया जाता है। आदिवासियों खास तौर पर आदिवासी महिलाओं के स्तर को ऊँचा उठाने तथा उनकी स्थिति को मजबूत करने के लिये कोई विशेष प्रयास नहीं किये गये जो कुछ भी प्रयास हुये हैं, वह सम्पूर्ण आदिवासियों को ध्यान में रखकर किये गए हैं, नियोजित विकास से इन जनजातीय महिलाओं का विचारों, व्यवहारों तथा आचरणों में हुये परिवर्तनों को परिलक्षित करना ही शोध का उद्देश्य है। अगर देखा जाए तो वास्तव में हमारे समाज के पुरूषों ने बहुत हद तक महिलाओं को उपर कठोर अत्याचार किये हैं और जो बरसों से होते चले आए हैं। सदियों से हमने जननी को अपने पैरों तले रौंदा है जो हमारी निर्मात्री है, उसी को हमने तोड़ा है जिसका हमें आदर तथा सम्मान करना चाहिये था, उसी का हमने निरादर किया, बेइज्जत किया, उसे अपने मनोरंजन का साधन समझा, उसे कार्य के हेतु माना, अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिये पुरूषों ने समय–समय पर अपने विचारों को बदला है। वर्तमान भारतीय समाज में नारी को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया गया है। उन्हीं वर्गों में से एक निम्न वर्ग भी है जहां इस आधुनिक युग में इन निम्नवर्गीय यानि जनजातीय महिलाओं का कोई स्थान नहीं है। इन जनजातीय महिलाओं का स्वावलम्बी होना ज्यादा महत्व रखता है। इन महिलाओं को राष्ट्र की मुख्यधारा में लाने के अनेकों प्रयास हर स्तर पर किये गये है। स्वतंत्रता के पश्चात तो जनजातियों के लिये कई सरकारी व गैर सरकारी कदम उठाये गये। संविधान के अन्तर्गत इनके लिये कई प्रकार के प्रावधान किये गये। कई योजहनाऐं बनायी गयी हैं। समय–समय पर तरह–तरह के कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये ताकि ये आदिवासी इनका लाभ लेकर पंक्ति में आगे आ सके। जनजातीय महिलाओं के लिये भी विशेष कार्यक्रम एवं योजनाएं संचालित की जा रही है, उन्हें हर स्तर पर मदद दी जा रही है ताकि वे अंधेरे से निकलकर उजाले की ओर कदम बढ़ायें तभी वे उजाले की अहमियत समझ पाएंगी तथा उसके महत्व को समझ सकेंगी – ''नियोजित विकास का जनजातीय महिलाओं की स्थिति पर पारिवारिक, आर्थिक, सामाजिक, धार्मिक, राजनीतिक, शैक्षणिक स्थिति पर किंचित प्रभाव'' इस अध्ययन विशेष की उपकल्पना है। मध्यप्रदेश के धार जिले में स्थिति तिरला ग्राम एवं नयापुरा ग्राम में 50 महिलाओं को साक्षात्कार विधि से तथ्य संग्रहण का कार्य किया गया।

नियोजन –

मानवीय सभ्यता, संस्कृति व व्यवहार में निरंतर परिवर्तन के कारण ही नियोजन का उदय हुआ है। मानवीय सभ्यता में ''व्यक्तिवाद'' का स्थान ''समूहवाद'' ने लिया और ''व्यष्टि'' के स्थान पर ''समष्टि'' अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। एक व्यक्ति के हित के स्थान पर सामाजिक हित को सर्वोपरि समझा जाने लगा है। परन्तु प्रकृतिदत्त स्वभाव के कारण व्यक्ति ''स्वहित'' के स्थान पर ''सर्वहित'' को महत्व नहीं दे पाता है। अतः व्यक्ति के व्यवहार को सामाजिक हित में परिवर्तित करने के लिये कुछ बाह्य प्रतिबंध लगाने पड़ते हैं। वास्तव में यही ''प्रतिबन्ध'' नियोजन के लक्षण हैं। इस प्रकार सामाजिक व आर्थिक क्रियाओं पर विवेकपूर्ण प्रतिबन्ध ही नियोजन का अंग है। एक प्रकार से राष्ट्रीय स्तर पर आर्थिक आवश्यकताओं व संसाधनों का अध्ययन करने के पश्चात नियोजन द्वारा यह सुनिश्चित किया जाता है कि किन वस्तुओं एवं सेवाओं का किन संस्थाओं के द्वारा उत्पादन व

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved ISSN: 2349-7637 (Online)

वितरण कराया जाये जिससे समाज का सर्वांगीण विकास संभव हो सके। नियोजन के द्वारा ही साधनों का अनुकूलतम उपयोग करके समाज के जीवन स्तर में वृद्धि करना संभव होता है। योजना आयोग के अनुसार आर्थिक नियोजन मूल रूप से निर्धारित सामाजिक उद्देश्यों के संदर्भ में साधनों का अधिकतम लाभ हेतु संगठित एवं प्रयुक्त करने का ढंग है। नियोजन की विचारधारा के दो प्रमुख अंग है – (1) उद्देश्यों को प्राप्त करने की प्रणाली, (2) उपलब्ध साधनों एवं उनके अनुकूलतम आवंटन का ज्ञान। नियोजन अल्पकालीन प्रक्रिया न होकर एक दीर्घकालीन प्रक्रिया मानी जाती है जिसमें आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक जैसे अन्य उद्देश्यों की पूर्ति की जाती है।

जनजातियों के लिये संचालित योजनाएं –

जनजातियों के लिये अनेक प्रकार की योजनाएं संचालित की गयी है जिनमें स्वावलंबन योजना, पवनपुत्र योजना, नवजीवन योजना, मधुवन योजना, वसुन्धरा योजना, जलजीवन योजना, वनजा, सहकार, धनवन्तरि योजना, न्याय निकेतन, सहारा विकलांग, आदिवासी राहत योजना, आदिवासी बसाहट योजना, सामूहिक विवाह योजना, निःशुल्क कानूनी योजना, एन.आर.इ.पी., आर.एल.इ.जी.पी., आई.सी.डी.एस. आदि और जनजातीय महिलाओं के लिये किये गये विशेष प्रयास के अंतर्गत आंगनवाड़ी प्रशिक्षण केन्द्र, शासकीय महिला सिलाई केन्द्र, छात्रवृत्ति योजना, कस्तूरबा महिला उद्योग, आदर्श मृणालिनी नारी निकेतन, दत्तक पुत्री योजनाएं आदि अनेक कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। इन सब योजनाओं का उद्देश्य जनजातीय महिलाओं का विकास, प्रगति एवं उनकी प्रस्थिति में परिवर्तन मुख्य रूप से रहा है।

नियोजित विकास का प्रभाव –

प्राप्त तथ्यों से निकले कुछ निष्कर्ष इस प्रकार हैं :

1. जनजातीय महिलाएं परिवार के प्रति ज्यादा सचेत हुयी है।
2. बच्चों के भविष्य को लेकर उनमें जागरूकता बढ़ी है।
3. प्रेम विवाह को अच्छी नजरों से देखने लगी है।
4. शिक्षा के प्रति रूचि बढ़ी है।
5. परम्परागत व्यवसायों में बदलाव आये हैं।
6. धार्मिक कट्टरताओं में थोड़ा ढीलापन आया है।
7. समाज सेवा के प्रति जागरूक हुयी हैं।
8. वे इलाज के परम्परागत तरीकों से आधुनिक अस्पतालों तक पहुंची है।
9. वे मनोरंजन के साधनों में इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का उपयोग करने लगी है।
10. शासकीय योजनाओं के प्रति उत्साह परन्तु कागजी कार्यवाहियों से भय बढ़ा है।
11. वे दैनिक जीवन में आधुनिक श्रृंगार सामग्री का उपयोग करने लगी है।

निष्कर्ष –

उक्त निष्कर्षों से हम यह कह सकते हैं कि जनजातीय महिलाओं का बौद्धिक स्तर अन्यों से कम नहीं है। उन्हें कुछ समझना या समझाना असंभव नहीं है परन्तु दैनिक झमेले ने उनकी वैचारिक शक्ति की नपुंसकता को अवश्य बढ़ाया है यद्यपि विशेषतः महिलाओं की नारित्व की अभिव्यक्ति के संदर्भ में कुछ चारित्रिक व वैचारिक बदलाव अवश्य आया है अर्थात ग्लेमर और फैशन का प्रभाव आदिवासी महिलाओं में देखने को मिलता है जिनमें सिनेमा और आधुनिक सामग्री से बनाव श्रृंगार की ओर प्रमुख आकर्षण है। निष्कर्षतः जनजातीय महिलाओं में बुद्धि की कमी नहीं है परन्तु विचार शक्ति की अनुपयोगिता की वजह से परिवर्तन क्रांति अभी तक नहीं आ पायी है।

संदर्भ ग्रन्थ –

1. चौहान आभा, (1990) ''ट्राइबल वुमेन एण्ड सोशल चेन्ज इन इंडिया'' इटावा ए.सी. ब्रदर्स
2. मजूमदार डी.एन. (1958) ''रेसेंज एण्ड कल्चर्स ऑफ इण्डिया'' बम्बई, एशिया पब्लिकेशन हाउस
3. नाईक टी.बी. (1956) ''द भील ए स्टडी'' दिल्ली, भारतीय आदिवासी सेवक संघ

4. नाईक टी.बी. (1969) ''द इम्पेक्ट ऑफ एजुकेशन ऑन भील्स'' नई दिल्ली, रिसर्च प्रोग्राम कमेटी, प्लानिंग कमीशन
5. रायजादा अजित (1971) ''ट्राईबल डेवेलपमेंट इन एम.पी.'' भोपाल
6. शर्मा टी.आर., वार्ष्णेय जे.सी. (1990) '' विकास का अर्थशास्त्र एवं नियोजन'' आगरा, साहित्य भवन
7. शर्मा बी.डी. (1984) ''प्लानिंग फॉर ट्राईबल डवलपमेन्ट'' नई दिल्ली, प्राची प्रकाशन

2015, RHIMRJ, All Rights Reserved

ISSN: 2349-7637 (Online)